Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)

https://www.talentpublication.info/ *Issue:3/Volume: 1/2025 ISSN:2583-9985*

Shared farming of the monkey and the partridge

बंदर और तीतर की साझा खेती

Translator: Anant Prasad Kharwar
Department of Foreign Languages (Old CHC Building)
Faculty of Arts, Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh, 221005
Email: anant.sarp@gmail.com

अनुवादित कहानी, **"बंदर और तीतर की साझा खेती "**जापान की एक बहुत ही लोकप्रिय लोककथा है , जो कई सदियों से जापान के विभिन्न भागों में सुनी और सुनाई जाती रही है।

यह कहानी जापान के विभिन्न लोककथा संग्रहों में पाई जाती है, जिनमें ***निहोन मुकाशि बानाशि ताइसेइ*** *(日本昔話大成)* [1]नामक कथा संग्रह मुख्य रूप से जानी जाती है। । इस कहानी को आमतौर पर जापानी में ***सारू तो कीजी नो योरिआइ ता (猿と蟹の寄合田), योरिआइ ता (寄り合い田)*** , ***किजि तो सारू नो ता जुकुरि (きじとさるの田作り),*** या ***सारू तो किजि नो होता ता (猿と雉のほった田)*** आदि अनेक मिलते-जुलते शीर्षकों से अलग-अलग क्षेत्रों में पाया जाता है।

इस कहानी के लेखक का नाम अज्ञात है । यह कहानी मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से फैली है, इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में इसके कई रूप देखे जा सकते हैं । कहानी एक दुष्ट आलसी बंदर और एक भले तीतर की है। जिनके पास एक साझे का चावल का खेत है। जिसमें दुष्ट आलसी बन्दर खेती का सारा काम तो तीतर से करवाता है लेकिन उस चावल बने मोची[2] को लेकर अकेले ही खाना चाहता है ।

बंदर और तीतर की साझा खेती

एक पुरानी बात है। कहीं एक बंदर और एक तीतर के पास एक चावल का साझा खेत था। जल्द ही वसंत आ गया और चावल के खेत की मेड़ों को बाँधने का समय आ गया, जिसमें चावल के खेतों के किनारों को मिट्टी से भरना होता है।

तीतर ने बंदर से कहा, "बंदर-भाई, बंदर-भाई! दूसरे खेतों में मेड़ों की बंधाई का काम शुरू हो गया है, इसलिए चलो हम भी अपने खेत की मेड़ों की बंधाई करते हैं।" इस पर बंदर ने कहा,

[1] https://namahage.is.akita-u.ac.jp/monogatari/show_detail.php?serial_no=3610, 08/09/2025, 02.30pm

[2] मोची एक पारंपरिक जापानी व्यंजन है। जो उबले हुए चावल को ओखल में कूट कर बनाया जाता है। मोची बनाने वाले ओखल और मूसल लकड़ी के बने होते हैं। जिसका मूसल हथौड़े के जैसा होता है। मोची को नए साल या ओबोन जैसे विभिन्न अवसरों पर तैयार किया और खाया जाता है।

"तीतर-भाई, मेरे पैरों में दर्द हो रहा है, इसलिए मैं शायद मेड़ बाँधने का काम नहीं कर पाऊँगा।"

इस पर तीतर ने बंदर से कहा, "अरे, कोई बात नहीं, आप अपना ध्यान रखिए। मैं मेड़ों की बंधाई करके रख दूँगा।" और उसने अकेले ही चावल के खेत की मेड़ों को बाँध दिया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, आखिरकार धान के खेतों की जुताई का समय आ गया। तीतर ने फिर बंदर से साथ में काम करने को कहा, लेकिन इस बार भी बंदर ने कहा कि उसके सिर में दर्द है और वह कोई काम नहीं कर सकता।

उस भले तीतर ने खुशी-खुशी एक बार फिर खुद ही काम संभाल लिया। यह सिलसिला चावल की रोपाई के समय तक चलता रहा और जब बंदर ने तबियत खराब होने का बहाना किया, तो एक बार फिर तीतर ने खुद ही काम संभाल लिया।

जल्दी ही शरद ऋतु आ गई और फसल काटने का समय आ गया, लेकिन बंदर ने एक बार फिर अस्वस्थता का बहाना बनाया और तीतर को अकेले ही चावल काटना पड़ा।

और जब चावल की कटाई हो गई, तो बंदर उछलता हुआ तीतर के पास आया और उससे बोला, "तीतर-भाई, मैंने अब तक तुमसे बहुत मेहनत करवाई है, चलो आज हम काटे गए चावल से चावल के मोची[1] बनाएँ और खाएँ।"

एक बार जब यह निर्णय हो गया, तो उन्होंने बांस के स्टीमर में चावल को भाप में पकाना शुरू कर दिया और ओखली को बाहर निकाल लिया। ऐसी हलचल थी मानो ओबोन और नया साल एक साथ आ गए हों। इस पर यह निर्णय हुआ कि बंदर मोची के लिए चावल को पीसेगा और तीतर उसे गूँथने का काम करेगा। और जब चावल पीस गया तो बंदर ने तीतर से एक बाल्टी लाने को कहा। तीतर जब बाल्टी लेने रसोई में गया, तो बंदर ने मौके का फायदा उठाकर मूसल, जिस पर मोची चिपका हुआ था, को लेकर पहाड़ों की ओर भाग गया।

और जब तक तीतर बाल्टी लेकर वापस आया, तब तक बंदर और मोची दोनों ही गायब हो चुके थे। वह भला तीतर समझ गया कि यह बंदर का ही काम है और वह क्रोधित होकर बंदर का पीछा करने लगा। लेकिन कहीं भी बंदर का कोई निशान नहीं मिला।

जहाँ तक बंदर का सवाल है, भागने की जल्दबाजी में उसने ध्यान ही नहीं दिया कि उसने मोची को झाड़ियों में गिरा दिया है। जब बंदर पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, तो तीतर के रोते हुए चेहरे की कल्पना करके उसे खुशी हुई। हालाँकि, मूसल के सिरे पर लगी मोची गायब हो चुकी थी।

बंदर आश्चर्यचकित हो गया और मोची की तलाश में पहाड़ से नीचे चला गया, जहाँ उसने झाड़ियों में तीतर को धूल लगे मोची से धूल

झाड़ते और उसे खाते हुए देखा। बंदर बार-बार तीतर से उसे भी मोची देने के लिए विनती करता रहा, लेकिन तीतर ने मना कर दिया, जिससे आखिर में बंदर को गुस्सा आ गया।

इस पर बंदर ने तीतर को धमकाते हुए कहा कि आज रात वह हमला करेगा और वहाँ से चला गया। तीतर बहुत परेशान था क्योंकि उसने बंदर को गुस्सा दिला दिया था। वह घर गया और फूट-फूटकर रोने लगा। उसी समय एक अंडा तीतर की ओर लुढ़कते हुए आया और पूछा, "तीतर-भाई, तुम क्यों रो रहे हो?" तीतर ने अंडे को बंदर के रात के हमले के बारे में बताया, तो अंडे ने कहा, "इतना रोने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

फिर भी तीतर रोता रहा। इस पर सींबारी बो[2], तातामी बुनने का सुआ, निगामुशी[3], हासामिमुशी[4], चिपचिपा गोबर और बड़ी चक्की का पाट आए और बोले–"तीतर-भाई, रोने की कोई ज़रूरत नहीं है, हम सब तुम्हारी मदद करेंगे।" इससे तीतर को अंततः राहत महसूस हुई और उसने रोना बंद कर दिया।

अब जब शाम ढलने लगी, तब सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए–अंडा चूल्हे की राख में, तातामी का सुआ चूल्हे के पास, निगामुशी मिसो के टब में, हासामिमुशी पानी की जार में, गोबर दहलीज पर और चक्की का पाट छत की बीम पर–और बंदर की प्रतीक्षा करने लगे।

और आखिरकार जब रात हो गई तो बंदर चिल्लाता हुआ आया, "तीतर, तीतर, रात के हमले का समय हो गया है!" लेकिन तीतर के घर के अंदर सन्नाटा था। बंदर ने घर का दरवाज़ा खोला और अंदर चला गया।

तभी सींबारी बो ज़ोर की आवाज़ के साथ बंदर के माथे पर लगा। बंदर चिल्लाया, "आह, बहुत दर्द हो रहा है। कौन मेरे सिर पर मार रहा है?" बंदर अपना सिर सहलाते हुए चूल्हे के पास गया। बंदर को ठंड लग रही थी, इसलिए उसने आग जलाने के लिए चूल्हे में जलते अंगारों पर फूँक मारी। तभी अंडा उछलकर बंदर की जाँघों में जा गिरा। "जल गया! जल गया!" चिल्लाते हुए बंदर ने अपने आगे के हिस्से को पकड़ लिया और सीधा नीचे गिर पड़ा, जिससे तातामी बुनने का सुआ उसके नितंबों में घुस गया।

"आह, आह! मिसो कहाँ है? मिसो जलने पर एक असरदार दवा होती है," बंदर चिल्लाया और मिसो टब की तरफ दौड़ा। वह उसे जलने पर लगाना चाहता था, लेकिन जल्दबाज़ी में मुँह में डाल लिया, जिससे उसने अनजाने में मिसो में छिपे एक निगामुशी को चबा लिया। वह बहुत ही असहनीय था।

"कड़वा है, बहुत कड़वा है, थू-थू! मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता!" बंदर चिल्लाया और पानी पीने के लिए जल्दी से अपना सिर पानी की जार में डाला। लेकिन वहाँ बैठे हासामिमुशी ने बंदर की जीभ काट ली।

तीतर पर हमला करने आया था, लेकिन उलटे उस पर ही हमला हो गया–यह सोचकर बंदर घबरा गया और जितनी तेज़ी से भाग सकता था, भागने की कोशिश की। लेकिन उसका पैर चिपचिपे गोबर पर पड़ गया और वह फिसलकर धड़ाम से गिर पड़ा।

तभी चक्की का पाट बोला, "अब उस लालची बंदर से छुटकारा पाने का समय आ गया है," और वह छत की बीम से ज़ोरदार आवाज़ के साथ बंदर के ऊपर गिर पड़ा। और इस प्रकार तीतर को अपना बदला मिल गया।

इस तरह कहानी खत्म होती है।

[1]मोची एक पारंपरिक जापानी व्यंजन है। जो उबले हुए चावल को ओखल में कूट कर बनाया जाता है। मोची बनाने वाले ओखल और मूसल लकड़ी के बने होते हैं। जिसका मूसल हथौड़े के जैसा होता है। मोची को नए साल या ओबोन जैसे विभिन्न अवसरों पर तैयार किया और खाया जाता है।

[2]एक प्रकार का सरिया होता है जिसका उपयोग दरवाजों और खिड़कियों को खुलने से रोकने के लिए किया जाता है। इसके अलावा दो दीवारों के बीच लगा के कपडे आदि टांगने के लिए प्रयोग किया जाता है।

[3]एक प्रकार का छोटा कीड़ा, जो स्वाद में बहुत ही कड़वा होता है, इसीलिए इसे निगामुशि कहते हैं। जापानी भाषा में निगा का अर्थ होता है कड़वा और मुशि का अर्थ होता है कीड़ा।

[4]एक प्रकार का छोटा कीड़ा होता है , जिसे अंग्रेजी में इयरविग कहते हैं । इस कीट के पास कैंची जैसे चिमटे होते हैं। जापानी भाषा में हासामी का अर्थ होता है कैंची और कैंची जैसे चिमटे होने के कारण ही इसे हासामीमुशि कहते हैं।